साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 2, अंक 37, मई(द्वितीय), 2018

पुस्तक समीक्षा

समीक्षित पुस्तक:
आधी आबादी के सरोकारों का तथ्यपरक विश्लेषण

लेखिकाः आकांक्षा यादव
समीक्षकः डा॔0 शील कौशिक

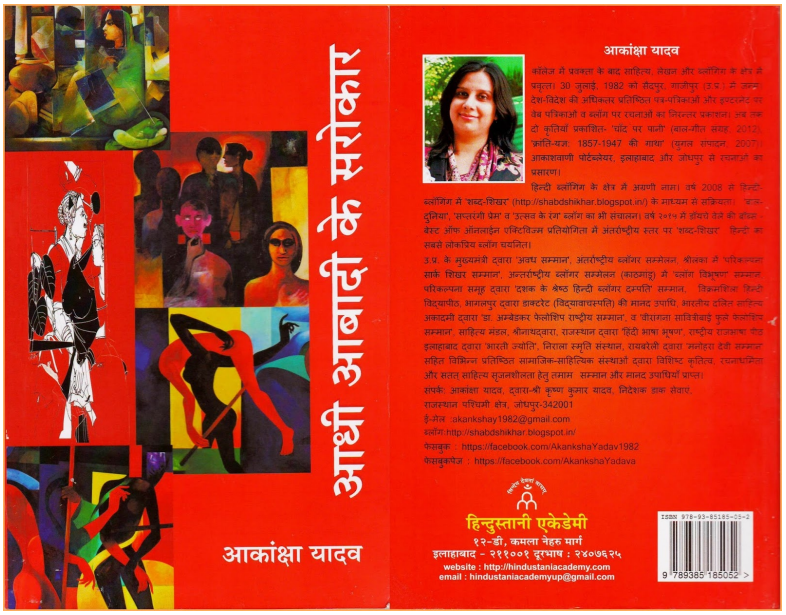

हिन्दी साहित्य व ब्लॉगिंग के क्षेत्र में अग्रणी स्थान बनाने वाली सुलेखिका आकांक्षा यादव की नारी विमर्श पर सद्य प्रकाशित कृति "आधी आबादी के सरोकार" है। आधी आबादी से जुड़े विभिन्न आयामों को इस पुस्तक में सुविधा के लिए दस भागों में विभक्त किया गया है। इस पुस्तक में चिंतनपरक लेखों के माध्यम से प्राचीन समय से लेकर वर्तमान समय तक की नारी की स्थिति का सटीक एवम् तथ्यपरक विश्लेषण किया गया है। एक तरह से ये लेख स्त्री को केन्द्र में रख कर समाज, संस्कृति, परम्परा एवम् इतिहास का पुनरीक्षण करते हैं कि कैसे स्त्री चेतना के क्रमिक विस्तार से परिवर्तन की लहर उठी और इस लहर ने कैसे पूरे समाज को आंदोलित किया।

पुस्तक के प्रथम अध्याय " समकालीन परिवेश में नारी विमर्श" में लेखिका आकांक्षा यादव ने लिखा है कि, पश्चिम में भले ही फ़ेमिनिज़्म के नाम पर नारी विमर्श को बढ़ावा दिया गया हो, पर स्त्री की अपनी अस्मिता, अस्तित्व और अधिकारों की ये लड़ाई प्राय: हर देश-काल में मौजूद थी और सदियों पुरानी है। नारी न तो सिर्फ कनक-कामिनी है और न ही अबला, बल्कि इससे परे वह दुष्टों की संहारिणी बनकर भी उभरी है। नारी को देह मात्र की बजाय उसके व्यक्तित्व को समग्र रूप में देखने की जरूरत है। बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में स्त्री की दशा और दिशा पर वैश्विक चिंतन स्त्री सशक्तिकरण के रूप में प्रारम्भ हुआ और इक्कीसवीं सदी के द्वार पर स्त्री-विमर्श के रूप में गूँज-अनुगूंज लेकर आया। वर्तमान में महिलाएं अपनी कार्य क्षमता व दृढ़

संकल्प से सभी क्षेत्रों में अपना परचम लहरा रही हैं। यहाँ तक कि पुरूष-वर्चस्व वाले क्षेत्रों में भी अपनी दमदार उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। आज की स्त्री जागरूक है और तेजी से स्वालंबन की ओर बढ़ रही है।

"स्त्रियों की दुनिया घर के भीतर है, शासन सूत्र का सहज स्वामी तो पुरुष ही है"-जैसी तमाम पुरुषवादी स्थापनाओं को ध्वस्त करती चर्चित-अचर्चित वीरांगनाओं की गाथा को लेखिका ने शोधपूर्ण अंदाज में "आजादी के आंदोलन में भी अग्रणी रही नारी" लेख में बड़ी खूबसूरती से सहेजा है। इतिहास के काल-खंड के साथ क्रमवार प्रस्तुत इन वीरांगनाओं के योगदान से युवा पीढ़ी को भी परिचित कराने की जरूरत है, ताकि वे अपने देश की इस स्त्री-शक्ति से बखूबी परिचित हो सकें।

शिक्षा और साहित्य ही वह मूलभूत साधन हैं जिससे नारी के बहुआयामी, बहुदिशा बोध और सृजनकारी द्वार खुलते हैं। भारतीय संस्कृति में शास्त्रों से लेकर साहित्य तक नारियों के योगदान से भरे पड़े हैं। लेखिका आकांक्षा यादव ने "शिक्षा और साहित्य के विकास में नारी की भागीदारी" की चर्चा करते हुये विश्ववारा, अपाला, लोमशा तथा घोषा जैसे तमाम विदुषियों की चर्चा की है, जिन्होंने वेद मंत्रों की रचना की और ऋषि पद को प्राप्त कर लिया था। पर जैसे-जैसे समाज में महिलाओं के प्रति भेद बढ़ता गया और उन्हें शिक्षा से वंचित किया गया, सामाजिक कुरीतियाँ और अंधविश्वास भी बढ़ते गए। संक्रमणकालीन कहे जाने वाले मध्यकाल और उसके बाद इसी कारण सतीप्रथा, बाल-विवाह, पर्दा-प्रथा, नारी अशिक्षा, विधवा उत्पीड़न जैसी कुरीतियों का बोल-बाला था, पर अंग्रेजी शासन के साथ ही प्रगतिशीलता का दौर फिर से आरंभ हो गया। आजादी के बाद नारी-शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए तमाम सरकारी प्रयासों के साथ-साथ, सामाजिक स्तर पर भी पहल हुई। इसके फलस्वरूप एक सामाजिक परिवर्तन की लहर आई और हाशिये पर धकेली, भोग्या या वस्तु समझे जाने की वेदना झेलती नारी, अपनी प्रज्ञा-प्रतिज्ञा से अपनी अस्मिता प्राप्त कर समाज को संतुलन और सौन्दर्य प्रदान करने लगी। आज शिक्षा की बदौलत ही नारी विभिन्न कार्य क्षेत्रों में ऊंचाइयों को छू रही है।

नारी स्वातंत्र्य का एक प्रमुख पहलू मुखर अभिव्यक्ति भी है, जो कि पत्र-पत्रिकाओं के पन्नों से लेकर ऑनलाइन साधनों तक पर प्रस्फुटित हो रही है। महिला साहित्यकारों-पत्रकारों ने जहाँ तमाम नए आयाम रचे हैं, वहीं अपनी सृजनशीलता की बदौलत स्त्री समाज के सरोकारों को भी आवाज दी है। "सोशल मीडिया और आधी आबादी के सरोकार" एवं "हिन्दी ब्लॉगिंग को समृद्ध करती महिलाएँ" लेखों में विदुषी लेखिका आकांक्षा यादव ने विस्तारपूर्वक बताया है कि वैश्वीकरण के दौर में सोशल मीडिया और ब्लॉगिंग समय की मांग है। इनसे जुड़कर अपने विजन, सोच एवं लक्ष्यों में बदलाव लाकर सामाजिक सरोकारों को जीवित रखा जा सकता है। आज कामकाजी महिलाओं के साथ-साथ घरेलू महिलायें भी इस पर खुल कर अपनी अभिव्यक्ति दे रही हैं। सोशल मीडिया पर लिखी विभिन्न पोस्ट उस खिड़की की तरह है जहाँ से हम पूरे समाज का अक्स देख सकते हैं। वे वैचारिक प्रतिरोध दर्ज कर रही हैं। अनेकानेक ऐसी प्रबुद्व महिलाओं के नाम हैं जो साहित्य की विभिन्न विधाओं से लेकर प्रायः हर विषय पर सशक्त लेखन और संवाद स्थापित कर रही हैं।

"माँ का रिश्ता अनमोल" लेख में लेखिका ने माताओं के द्वारा अपनी संतान के लिए अत्यधिक त्याग करने के बावजूद खुलासा किया है कि समाज और परिवार में नैतिक अवमूल्यन के चलते कैसे तमाम माँ जिल्लत भरी जिंदगी जी रही हैं। हेल्पेज इण्डिया के 2011 के एक सर्वे के अनुसार घर में 70 फीसदी माँएं बहू-बेटे का अत्याचार झेलती, 64 फीसदी बहुएँ सास को प्रताड़ित करती हैं तथा 87 फीसदी बुजुर्ग माँओं की उपेक्षा की जा रही है। वृदांवन में 15,000 बुजुर्ग महिलाएँ भीख मांग कर गुजारा कर रही हैं। आकांक्षा यादव जी ने सही ही लिखा है कि, साहित्य से लेकर फिल्मों में माँ के लिए भरपूर संवेदनाएँ प्रकट की जाती हैं, पर माँ अभी भी अकेली है।

प्रगतिशीलता के तमाम मानकों के बावजूद महिलाएँ आज भी घरेलू हिंसा (जिसमें शारीरिक, लैंगिक, भावनात्मक हिंसा व दहेज उत्पीड़न शामिल है) की शिकार हैं। "घरेलू हिंसा बनाम अस्तित्व की लड़ाई" लेख में लेखिका ने इसके सामाजिक, आर्थिक और कानूनी पहलुओं की विस्तार से चर्चा करते हुये लिखा है कि इसके लिए महिलाओं को अति सहनशीलता छोड़कर अपने अधिकारों की लड़ाई स्वयं लड़नी होगी और पुरातन परम्पराओं को तोड़ कर पुनर्व्यख्यायित करना होगी।

"नारी सशक्तिकरण बनाम अशक्तिकरण" इस पुस्तक का एक प्रमुख अध्याय है। इसके अलावा लेखिका ने "आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में नारी" और "राजनीति में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने की जरूरत" विषयक अपने लेखों में भी दर्शाया है कि, कुछ सफल व उच्च पदों पर आसीन महिलाओं की चकाचौंध देख हम सोचते हैं कि महिलाएँ आज पूरी तरह सशक्त हैं, परंतु अभी तो एक लंबी यात्रा करनी बाकी है। संसद से लेकर कार्यपालिका तक, प्रशासन से लेकर न्यायपालिका तक अभी भी महिलाओं का प्रतिनिधित्व बेहद कम है। सन् 2015 के आंकड़ों के अनुसार भारतीय संसद के दोनों सदनों में मात्र 12 फीसदी महिलाएँ है तभी तो वहाँ भी एक-तिहाई आरक्षण की मांग उठाई जा रही है। महिला सशक्तिकरण की राह में अभी बहुत से रोड़े हैं, उन्हें बहुत सी मंजिलें पार करनी हैं। राजनीतिक एवम् आर्थिक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी को लेकर लेखिका की चिंता वाजिब है। घरेलू महिलाओं का अवदान कहीं भी मान्य नहीं। भारत 7-8 फीसदी विकास दर के साथ समृद्वि और संपन्नता की ओर अग्रसर है पर इस सम्पन्नता में महिलाओं का योगदान कितना? यह विचारणीय है।

समग्रतः सुलेखिका आकांक्षा यादव ने इस कृति के माध्यम से स्त्री संघर्ष और स्त्री अस्मिता से संबंधित शोधपरक व चौंका देने वाले तथ्य प्रस्तुत कर आधी आबादी के सरोकारों का आईना हमें दिखाया है। इन संवेदनशील विषयों पर जिस साफगोई से लेखिका ने विश्लेषण प्रस्तुत किया है उससे नारी सशक्तिकरण के विषय में चिन्तन, मनन की प्रेरणा व दिशा मिलेगी। एक सच्चा लेखक जैसा लिखता है वैसा ही जीवन जीता है। लेखिका ने अपने स्वकथ्य में यह बात स्वीकारी है जो कि वंदनीय है। सरल, सुग्राह्य भाषा में लिखा यह लेख-संग्रह पठनीय व संग्रहणीय है। मेरा ध्रुव विश्वास है कि इस कृति का चहुँ ओर स्वागत होगा।

समीक्ष्य पुस्तक : आधी आबादी के सरोकार
लेखिका : आकांक्षा यादव, टाइप 5 निदेशक बंगला, पोस्टल आफिसर्स कालोनी, जोधपुर, राजस्थान
प्रकाशक : हिन्दुस्तानी एकेडेमी, 12 डी कमला नेहरू मार्ग, इलाहाबाद
प्रकाशन वर्ष : 2017, मूल्यः रू0 110/- मात्र, पृष्ठ-112
समीक्षक : डॉ. शील कौशिक (हरियाणा प्रदेश की श्रेष्ठ महिला रचनाकार सम्मान प्राप्त साहित्यकार)
 # 17, हुडा सेक्टर-20, सिरसा-125055 (हरियाणा)
मो. 9416847107 ई-मेल : sheelshakti80@gmail.com

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें